



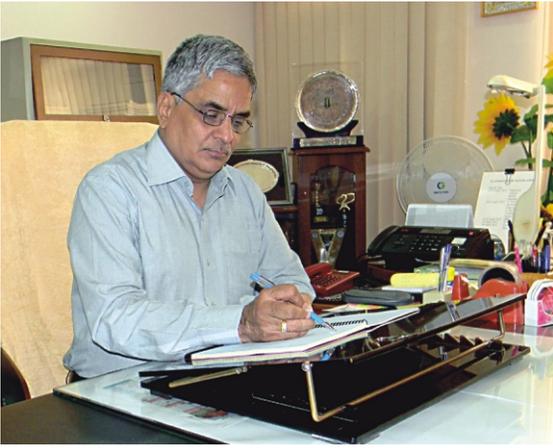
आजामुख



(केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान समाचार पत्र)



शीघ्र शंवाद...



एशिया एवं अफ्रीका महाद्वीपों में जहां विश्व का निर्धनतम वर्ग निवास करता है लघु रूमन्थी पशु, विशेष रूप से बकरी, काफी महत्व रखते हैं। इसका मुख्य प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि विश्व की कुल बकरी संख्या का 95 प्रतिशत इन दो महाद्वीपों में पाया जाता है। भारत-वर्ष में भी ऐसे क्षेत्रों में जहां हरित क्रान्ति की लहर नहीं पहुंच पाई है लघु एवं सीमान्त किसान परिवार जिनमें भूमिहीन भी शामिल है, और जो सिंचाई के पर्याप्त साधनों के अभाव में कृषि नहीं कर पाते हैं बकरी पालन कर जीविका चलाते हैं। यह बात भी अब मानी है कि विकासशील देशों में बकरी पालन महिला के सशक्तिकरण के साथ निर्धनता दूर करने का महत्वपूर्ण साधन है।

साधन विहीन भंगुर पारिस्थितिकी में गिरते कृषि उत्पादन के कारण लघु एवं सीमान्त किसान बकरी पालन जैसे व्यवसाय को अंगीकार करने के बाध्य किया है जिसका परिणाम है कि आज भारत में 50 लाख परिवार बकरी पालन करते हैं जब कि यह संख्या 1970 में 30 लाख थी। भारत की अनेक प्रादेशिक सरकार भी बकरी पालन को बढ़ावा देती हैं जिसका परिणाम है कि विगत 30 वर्षों में भारत में बकरी संख्या जो 1977 में

7.6 करोड़ थी 2011 में लगभग 15.4 करोड़ हो गई है और वर्तमान में भारत विश्व का सर्वाधिक बकरी वाला देश हो गया है।

बकरी संख्या में वृद्धि का कारण इसके मांस की निरन्तर बढ़ती मांग है जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखी जा सकती है। राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं योजना अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली के अनुसार वर्ष 2020 तक बकरी मांस की मांग बढ़ कर 1.27 करोड़ टन तक होने की संभावना है जो वर्तमान में 38 लाख टन है। इसके अतिरिक्त पश्चिम राजस्थान जैसी विषम परिस्थितियों में जहां भू-क्षरण एवं कृषि आधारित जीविका संसाधनों की कमी के चलते किसान कृषि एवं गौवंशी पशुओं को छोड़ बकरी पालन को प्रेरित हुए हैं।

इस परिस्थिति में बदलते हुए फसल चक्र ने कुल प्रश्नों के हल ढूढने की एक चुनौती हमारे सामने रखी है। इनमें प्रथम प्रश्न जो बार-बार हर मंच पर पूछा जाता है वह है कि क्या बकरी वातावरण को नष्ट करने वाली है ? दूसरा प्रश्न है कि कृषि भूमि में लगातार होती कमी और सघन कृषि की वर्तमान परिस्थितियों में क्या बकरियों को चरने का स्थान मिल पायेगा? यदि नहीं, तो हमारे पास विकल्प क्या है?

प्रथम प्रश्न के उत्तर में हमने बार-बार समझाने का प्रयास किया है कि इस बात के कोई प्रमाण नहीं मिलते कि बकरी किसी भी प्रकार से वातावरण को नष्ट करती हैं। बल्कि बीजों के प्रकीर्णन में बकरी की महत्वपूर्ण भूमिका है। जोधपुर काजरी में अध्ययन से पता चला है कि पत्तियों को कुतरते समय

संपादक मंडल

अध्यक्ष : दिनेश कुमार शर्मा

सदस्य : भुवनेश्वर राय, विवेक गुप्ता, हरिऔध तिवारी

टंकण : अरूण सिंहल

बकरियों द्वारा लगाई गई लार (मुख झाव) शाखा को अधिक पल्लवित करने में मदद करती है जो कालान्तर में नई शाखाओं को जन्म देती है जिससे पत्तियों के रूप में पशुओं को अधिक चारा मिलता है। यह विषय इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तव में उन निर्धन और साधन विहीन किसान से जुड़ा है जिनकी आजीविका का एक मात्र साधन बकरी पालन है। अतः ऐसे भ्रामक तथ्यों को दूर करने के लिए वैज्ञानिकों से मेरा अनुरोध है कि समग्र वैज्ञानिक प्रयत्न किए जायें।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में मेरा कथन है कि सघन कृषि की स्थिति में (जहां बकरी की चराई सम्भव नहीं है) बकरी पालन के भी सघनीकरण की आवश्यकता होगी। शनै-शनै बकरी प्रक्षेत्रों की बढ़ती संख्या भी इस बात का संकेत है कि किसान भाई भी अब इस बात को समझने लगे हैं कि शून्य लागत से बकरी पालन कर आजीविका तो चलाई जा सकती है परन्तु इसे व्यवसायिक रूप देने के लिए हमें सघन बकरी पालन करना ही होगा। ऐसे में हमारे सामने चुनौती है कि ऐसी तकनीकियों का विकास किया जाये जो

अल्प लागत आहार आपूर्ति के साथ सघनीकरण से उत्पन्न समस्याओं जैसे परजीवी प्रकोप और पी.पी.आर जैसे रोगों से निजात पाने में किसानों की समुचित मदद कर सके। मुझे आशा है कि संस्थान और अन्यत्र वैज्ञानिकों के निरन्तर किए जा रहे प्रयास इस प्रश्नों के सही उत्तर देने में सक्षम होंगे और बकरी से जुड़ी सभी भ्रान्तियां समाप्त होगी तथा बकरी पालन सर्वमान्य रूप से एक सफलतम व्यवसाय के रूप में प्रतिष्ठित हो सकेगा।

गणतन्त्र दिवस

संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, महिलाओं व बच्चों द्वारा 63वाँ गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी, 2012 को संस्थान के क्रीडांगन में उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों की अध्यक्षता संस्थान निदेशक डा. देवेन्द्र स्वरूप द्वारा की गयी। समारोह में मुख्य अतिथि महोदय ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर, ध्वजारोहण एवं सुरक्षा कर्मियों की गारद का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर संस्थान के कर्मचारियों की दो टीमों के बीच रसाकशी, बालिकाओं की दौड़, महिलाओं हेतु म्यूजिकल चेरर आदि कुछ कार्यक्रम आयोजित किए गए। अंध विद्यालय कीठम (आगरा) के बच्चों की दो टीमों के मध्य क्रिकेट मैच का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण विशेष आकर्षण रहा। अपने अभिभाषण में संस्थान निदेशक ने संस्थान कर्मियों को एक जुट होकर कार्य करने को प्रेरित किया।



26.01.2012



विभिन्न जलवायु एवं मौसमों का बकरियों पर प्रभाव एवं उनका प्रबन्धन

बकरी पूरे विश्व में दूध, माँस और रेशे का महत्वपूर्ण स्रोत है। यह विश्व की विभिन्न जलवायु जैसे-मरूस्थल, बर्फीले एवं पर्वतीय क्षेत्रों में एक सफल अनुकूलित पालतू जानवर है। बकरी एक समतापीय पशु है और उसे अपने शरीर में संचालित रासायनिक क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिए शरीर का तापमान स्थिर रखना पड़ता है। हमारे देश की जलवायु पूरे वर्ष एक समान नहीं रहती, कभी तापमान 40.0-50.0° से.ग्रे. तो कभी 0.0° से.ग्रे. से भी नीचे रहता है। ऐसे में मौसम परिवर्तन का बकरियों पर विशेष प्रभाव पड़ता है। अत्यधिक गर्म तथा शीत मौसम/ऋतु बकरियों की उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। आवास प्रबन्धन से बकरियों को मौसम के प्रतिकूल प्रभाव से बचाया जा सकता है तथा उत्पादन में कमी को कम किया जा सकता है।

शुष्क गर्म मौसम का बकरियों पर प्रभाव

गर्मियों (मई-जून) में हवा का तापमान शारीरिक तापमान से ऊपर होने लगता है। तब वातावरण की गर्मी का प्रवाह बकरी के शरीर की तरफ होने लगता है। इस अतिरिक्त ऊर्जा की बकरियों को आवश्यकता नहीं होती है, तो ऐसे में बकरी इस अतिरिक्त ऊर्जा को वातावरण में वापस मुख्यतः शरीर की त्वचा की सतह तथा ऊपरी श्वसन तंत्र की गीली सतह द्वारा निकालती है। गर्मी के मौसम में जब तापमान 45.0-50.0° से.ग्रे. होता है तब बकरी की श्वसन दर सामान्य से 70 प्रतिशत बढ़ जाती है। उच्च तापमान से श्वसन अन्तराल बढ़ने के साथ-साथ शरीर की त्वचा द्वारा अतिरिक्त ऊर्जा की हानि अधिक होती है बकरियों में कम किन्तु अधिक बड़ी श्वेद ग्रन्थियों से अन्य पशुओं की अपेक्षा अतिरिक्त शारीरिक ऊर्जा का क्षरण सुगमता से कर बकरी ताप

बनाये रखती हैं।

शीत ऋतु का बकरियों पर प्रभाव

शीतकाल (दिसम्बर-जनवरी) के महीनों में बकरी के शरीर का तापमान तो 37.5-39.5° से.ग्रे. रहता है और वातावरण का तापमान 0.0° से.ग्रे. तक गिर जाता है। ऐसे में बकरियों की शारीरिक ऊर्जा का अधिकांश भाग उसके शारीरिक तापमान को सामान्य रखने में खर्च होता है और निरन्तर ऊर्जा का ह्रास होता है। ऐसे में बकरियों किसी बाह्य ऊर्जा स्रोत जैसे कि सूर्य की विकिरण ऊर्जा का उपयोग कर खाद्य पदार्थों से मिलने वाली ऊर्जा को अपने उत्पादन में प्रयोग कर सकती हैं। शुष्क खाद्य पदार्थों का सेवन बरबरी तथा सिरोही बकरियों द्वारा धूप में कम (क्रमशः 879.98 तथा 986.59 ग्राम/दिन) तथा छप्पर घर में अधिक (क्रमशः 1027.77 तथा 1146.13 ग्राम/दिन) पाया गया।

आवास प्रबन्धन

शीत, ग्रीष्म ऋतु की अपेक्षा बकरियां के लिए अधिक कष्टदायी है। ऐसे में बकरियों के लिए उत्तम घर का प्रबन्धन कर उन्हें सर्दियों तथा शुष्क-गर्म मौसम से होने वाले प्रतिकूल प्रभावों से बचाया जा सकता है। दोनों ऋतुओं में छप्पर घर, सीमेन्ट वाला या बिना घर की अपेक्षा बकरियों के लिए आरामदायक है। शुष्क-गर्म मौसम में बकरियाँ अपने आपको वातावरण के अनुकूल ढाल तो लेती हैं, लेकिन वातावरण के प्रभाव से बचने के लिए उत्तम घर बकरी के अनुकूलन में सहायक सिद्ध हुआ है। बकरी के सामान्य दैहिक मानक, शारीरिक तापमान 38.5-39.5° से.ग्रे., श्वसन दर 12-18 (प्रति मिनट) तथा हृदय स्पंदन दर 70-80 (प्रति मिनट) है। हमारे परीक्षणों के दौरान शुष्क-गर्म मौसम में वातावरण की अस्थिरता के कारण



बकरियों के दैहिक मानक सामान्य से अधिक हो जाती है। बरबरी में श्वसन दर 49.91 तथा हृदय स्पंदन दर 88.24 प्रति मिनट तथा सिरोही में ये मानक 52.69 तथा 86.15 प्रति मिनट रही। सर्दियों में यह बरबरी में 23.77, 99.32 तथा सिरोही में 22.99, 93.15 प्रति मिनट रही। इस प्रकार वातावरण की अस्थिरता के दुष्प्रभाव से बकरियों को बचाने के लिए आवास प्रबन्धन एक सामान्य उपाय है। हमारे अध्ययनों से छप्पर घर में शुष्क-गर्म मौसम में श्वसन तथा हृदय स्पंदन दर बरबरी बकरियों में 37.79, 82.75 तथा सिरोही में 30.89 तथा 82.19 प्रति मिनट रही। सर्दियों में यह बरबरी में 21.08, 96.60 तथा सिरोही में 19.08 तथा 91.96 प्रति मिनट तक नियन्त्रित किया गया।

इस प्रकार उत्तम आवास प्रबन्धन से बकरी को गर्मी तथा सर्दियों के उतार-चढ़ाव तथा अन्य प्रतिकूल प्रभावों से बचाया जा सकता है और आवास प्रबन्धन गरीब कृषकों के लिए एक आसान और सस्ता साधन है।

– अनीता सैमार, सतीश कुमार जिन्दल एवं एन. रामाचन्द्रन

क्षेत्र अनुभव प्रशिक्षण

संस्थान द्वारा नवम्बर 2011 में दिनांक 8-28 की 3 सप्ताह की अवधि में राष्ट्रीय कृषि शोध एवं प्रबन्धन अकादमी के 8 प्रशिक्षु वैज्ञानिकों को क्षेत्रानुसार अनुभव पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। देश के विभिन्न भागों से पधारे प्रशिक्षणार्थियों ने इस अवधि में क्षेत्रीय विकास के लिए प्रचलित संस्थान परियोजनाओं की गतिविधियों का जायजा लिया। संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ प्रशिक्षुओं ने निकटवर्ती गांव बरका नगला में किसान वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन कर बकरी-पालन पर चर्चा की और किसानों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त की। संस्थान वैज्ञानिक डा. अशोक कुमार, डा. विजय कुमार एवं डा. बृजमोहन ने इस कार्यक्रम की संरचना तैयार की और



क्रियान्वित किया।

क्या आप सूचना के अधिकार को भली-भाँति जानते हैं ?

- सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 एक असाधारण गजट नोटिफिकेशन के माध्यम से 21 जून, 2005 को अस्तित्व में आया।
- इस एक्ट के अन्तर्गत देश का कोई भी आम नागरिक रु. 10.00 शुल्क के रूप में जमा करके सरकार के पास उपलब्ध कोई भी सूचना प्राप्त कर सकता है परन्तु प्राइवेट संस्था, बाडी या फेडरेशन से इस एक्ट के अन्तर्गत सूचना प्राप्त नहीं की जा सकती।
- सूचना प्राप्त करने के लिये कोई कारण बताने की आवश्यकता नहीं है। गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले व्यक्तियों के लिये कोई भी शुल्क देय नहीं है।
- ऐसी कोई भी सूचना जो संसद/सांसदों/विधायकों को देय है किसी भी नागरिक के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।
- मांगी गयी सूचना प्रार्थना-पत्र प्राप्त होने के 30 दिन के अन्दर उपलब्ध करायी जायेगी, परन्तु यदि सूचनाएँ किसी के जीवन-मरण का प्रश्न है ऐसी सूचना 48 घण्टे में उपलब्ध करानी होगी।
- इस एक्ट के माध्यम से सूचना निर्धारित अवधि के अन्तर्गत ही उपलब्ध करायी जाती है तथा समय सीमा समाप्त हो जाने के बाद सूचना न दिए जाने की स्थिति में सूचना उपलब्ध कराने वाले उत्तरदायी अधिकारी पर रु. 250.00 प्रतिदिन अधिकतम रु. 25000.00 अर्थ दण्ड का प्रावधान है।
- सूचना मांगने वाले प्रभावित व्यक्ति के लिये क्षतिपूर्ति का भी प्रावधान है।
- सुरक्षा एवं सतर्कता एजेन्सियों से सम्बन्धित सूचनाएँ तथा ऐसी कोई भी सूचनाएँ जिससे देश की एकता व अखण्डता प्रभावित होती है एक्ट के माध्यम से देय नहीं हैं। परन्तु इस तरह की एजेन्सियों में भ्रष्टाचार या मानवाधिकार उल्लंघन से सम्बन्धित सूचनाएँ देय होगी।
- किसी भी सूचना मांगने वाले व्यक्ति के प्रार्थना-पत्र को यदि केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी अथवा अपीलीय अधिकारी द्वारा अस्वीकार किया जाता है तो इसके लिये पर्याप्त कारण का उल्लेख करना होगा।
- प्रक्रिया के दौरान किसी थर्ड पार्टी (किसी अन्य व्यक्ति की व्यक्तिगत सूचना) के विषय में यदि सूचना मांगी जा रही है तो सूचना उपलब्ध कराने से पहले उस थर्ड पार्टी की सहमति लेना आवश्यक है।
- यदि सूचना मांगने वाला व्यक्ति अनपढ़, अज्ञानी या अक्षम है तो ऐसी दशा में केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी द्वारा उस व्यक्ति को सभी प्रकार की सहायता प्रदान करनी होगी।
- केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी को उपलब्ध करायी गयी सूचना यथावत् सम्बन्धित व्यक्ति को भेजनी होगी तथा भेजी जाने वाली सूचना पर केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी को अपना कोई भी विचार या आशय देने का कोई भी अधिकार नहीं है।
- कोई भी सूचना जिस स्वरूप में उपलब्ध है उसी स्वरूप में उपलब्ध करायी जायेगी न कि किसी भेजे गये प्रारूप या प्रपत्र पर उपलब्ध करायी जायेगी।
- सूचना केवल भारतीय नागरिक को ही उपलब्ध करायी जायेगी किसी भी विदेशी व्यक्ति को सूचना उपलब्ध नहीं करायी जा सकती है।

संकलन - विवेक कुमार गुप्ता

बकरियों की व्यवहारिक एवं संसर्ग प्रवृत्तियां

‘प्रतिस्पर्धा’ जीवन का एक निरन्तर जारी खेल है। बकरी का संसार भी इसका अपवाद नहीं है। जन्म के बाद से बकरी मेमने अपने सहोदरो से खीस के लिए फिर मां के दूध के लिए, ठोस स्थूल भोजन के लिए संघर्ष करते देखे गये हैं। मां बकरी भी अन्य बकरियों से चरई में भोजन के लिए अच्छी जगह और अच्छी गुणवत्ता वाले भोजन के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं। वयस्क बकरे भी जीवन भर आहार, आवास एवं प्रजनन अधिकार के लिए संघर्ष करते हैं। इस संघर्ष में हमेशा मजबूत और शाक्तिशाली ही जीतते हैं और कमजोर या तो समझौता कर लेते हैं या नष्ट हो जाते हैं।

बकरियों में यौन संसर्ग प्रवृत्तियां जल्दी ही प्रारम्भ हो जाती हैं। स्वभावतः 7 दिवस जन्मोत्तर ही बकरी मेमना दूसरे मेमनों पर चढ़ाई शुरू कर देता है। अल्प वयस्क नर बकरी/पठिया बकरी के पास पहुंचकर उनकी मूत्रधार में नाक भिगोकर अपने होठों की एक खास मुद्रा से उनके गर्म होने का पता लगाते हैं। लगभग इसी प्रकार व्यवहार संसर्ग के आयु को प्राप्त करने वाली पठिया बकरियों में देखा जाता है। यदि एक अल्पायु नर को उससे बड़े नरों के बाड़े में रख दिया जाये तो देखेंगे कि इस मेमने को एक कठिन दौर से गुजरना पड़ता है और बड़े बकरे घंटों और कभी-कभी दिनों तक उस पर चढ़ाई करेंगे। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहेगी जब तक कि अल्पायु मेमना संघर्ष कर अपना स्थान बाड़े में नहीं बना लेता। केवल मादा बाड़े में भी कुछ इसी तरह की प्रक्रिया अल्पायु बकरी के साथ होती है।

लैंगिक रूप से परिपक्व बकरों में भी एक प्रकार का अनुशासन स्थापित देखा गया है जिसमें सबसे प्रभावी एवं मजबूत

(हमेशा आयु में सबसे बड़ा नहीं) झुण्ड का नेतृत्व करता है। परिपक्व मादाओं में नर की अनुपस्थिति में, ऐसा ही व्यवहार देखने को मिलता है। यदि नर एवं मादा बकरियां साथ रहती हैं तो मजबूत एवं प्रभावी नर अपना प्रभुत्व स्थापित करता है। देखा गया है कि कभी-कभी कोई बकरी के लिए किसी विशेष नर की पारस्परिक अरुचि है तो यह नर अन्य नरों को भी इस बकरी से यौन संसर्ग नहीं करने देता और न ही स्वयं संसर्ग करता है।

अच्छा प्रबन्धन वही है कि जिसमें कुछ चयनित बकरियों के साथ यौन संसर्ग के लिए किसी एक नर का चयन किया जाता है और साथ रखा जाता है। लैंगिक रूप से सक्षम एक बकरा 40-50 परिपक्व बकरियों में (2 प्रजनन चक्रों में) प्रजनन के लिए पर्याप्त है। परिपक्व बकरी का ऋतुकाल प्रत्येक 21 दिन बाद आता है। व्यवहारिक रूप से बकरी की कुछ नस्ल ऋतु परिवर्तन से प्रभावित होता है तो कुछ नस्लें वर्ष भर प्रजनन करती हैं आमतौर पर बकरियों में प्रजनन क्रिया ऋतु आधारित होती है।

प्रजनन के लिए तैयार बकरी आमतौर पर पूंछ हिलाकर नर को आकर्षित करती है जिसे आमतौर पर “फ्लैगिंग” कहा जाता है। संसर्ग के लिए पूर्ण रूपेण तैयार बकरी के मूत्र में एक विशेष रसायन होता है जो उसे संसर्ग के लिए तैयार प्रदर्शित करता है। संसर्ग के लिए तैयार नर मूत्र से अपने चेहरे, दाढ़ी एवं अगले पावों को सिंचित करता है। ऐसा कर वह प्रजनन हेतु तैयार बकरी की ओर अग्रसर होता है। प्रजनन के लिए तैयार बकरी पिछली टांगों पर बैठकर मूत्र का त्याग करती है जिसमें नर अपनी नाक भिगो सिर उठाकर अपने होठों को

विशेष प्रकार चलाता है इस प्रकार नर सम्बन्धित बकरी के प्रजनन के लिए तैयार होने की घोषणा करता है। इसी बीच नर प्रजनन के लिए तैयार बकरी के साथ-साथ चलता है और दौड़ता है। नर अपने सिर को बकरी के सिर के पास रखकर अपनी एक अगली टांग को किक कर मुंह से बुप-बुप की विशेष आवाज निकालता है।

बकरी की गर्मी की अवस्था को हम 3 भागों में बांट सकते हैं। 1. चढ़ती गर्मी 2. ठहराव गर्मी 3. जाती गर्मी। यह लगभग 1 दिन के अन्तराल की होती है। ठहराव की गर्मी की स्थिति में बकरी यौन संसर्ग स्वीकारती है और खड़े होकर नर को संसर्ग का अवसर देती है। कई बकरियां भी नर की तरह ही आवाज निकालती हैं। सफल संसर्ग के समय नर चढ़ाई की स्थिति में स्वलन के समय अपने सिर को ऊपर उठाता है। बाड़े में ऐसी प्रक्रिया अन्य बकरियों को भी प्रजनन के लिए प्रेरित करती है। अधिक बाहरी तापमान होने की स्थिति में संसर्ग शाम को या रात्रि को कराया जाना उचित है क्योंकि नर एवं मादा दोनों ही संसर्गोपरान्त थकान का अनुभव करते हैं।

आमतौर पर प्रजनक बकरों का शारीरिक रूप से स्वस्थ होना अनिवार्य है। प्रजनन काल में बकरे के वजन में आमतौर पर 15 कि.ग्रा. तक की कमी देखी जा सकती है। नर को इस काल में पौष्टिक और पर्याप्त आहार किया जाना चाहिए। एक अच्छा चुस्त प्रजनक बकरा संसर्ग के लिए तैयार बकरी के मिलने पर आहार का त्याग भी कर सकता है। यह व्यवहार यद्यपि बकरियों में नहीं देखा जाता तथापि प्रजनन काल से पहले आहार व्यवस्था दुरुस्त होनी चाहिए।

मादा बकरियों के स्वास्थ्य का प्रभाव भी उससे पैदा मेमनों पर पड़ता है जो उनकी उत्तर जीवितता और स्वास्थ्य को विधिवत करता है। यदि बकरी का स्वास्थ्य अच्छा है तो प्रजनन से तुरन्त पहले उन्हें अधिक राशन की आवश्यकता नहीं है। बकरी के मेमनों को दूध पिलाने के काल में यौन संसर्ग भ्रामक हो सकता है या ऋतुकाल छोटा हो सकता है। बकरी की आयु एवं सामान्य स्वास्थ्य भी उसकी प्रजनन क्षमता को प्रभावित कर सकता है।

आमतौर पर 50 परिपक्व बकरियों के साथ एक नर को 45 दिन तक रखना उचित होगा। इस समय में बकरियों के दो ऋतुकाल पूरे होंगे और पहले काल में संसर्ग न प्राप्त कर पाने या गर्भ न धारण करने वाली बकरी दूसरे ऋतुकाल में संसर्ग पा सकेगी। 45 दिन की कालावधि के बाद बकरे को बाड़े से हटा कर अन्य बकरों के साथ रखें। यदि आप प्रजनन के लिए बकरियां रखते हैं तो यह भी अभिलेखन होना चाहिए कि कौन से नर से किस बकरी का संसर्ग कराया गया था।

ज्ञात हो कि लगातार लम्बे समय तक नर का मादाओं के साथ रखे जाने से नर में संसर्ग के प्रति उदासीनता देखी गई है। ऐसी स्थिति में इस बकरे को एक टीसर नर या प्रजनक बकरे के साथ रख संसर्ग के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

बकरों के प्रथम यौन संसर्ग में जल्दी न करें और समुचित शारीरिक विकास हो जाने पर ही उन्हें संसर्ग के लिए प्रस्तुत

करना चाहिए। इससे कठिन प्रसव की स्थिति को पर्याप्त रूप से कम किया जा सकता है। आमतौर 9-10 मास की बकरी प्रजनन के तैयार हो जाती है। प्रथम संसर्ग में बकरी के लिए लगभग समान आकार और नस्ल के बकरे का चयन करें। ऐसा कर किसान भाई अपने दीर्घकालीन लाभ की संतुष्टि के साथ अच्छी जनन प्रक्रिया की परम्परा को जन्म दे सकते हैं।



– दिनेश कुमार शर्मा एवं सौविक पॉल

प्रशिक्षण – राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना

बकरियों में “अन्त-परजीवी आनुवंशिकी प्रतिरोधकता के संदर्भ में जटिल गुण विश्लेषण का आनुवंशिकी विच्छेदन” विषय पर संस्थान के आनुवंशिकी एवं बकरी प्रजनन विभाग द्वारा एक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। डा. प्रमोद कुमार राउत के समन्वयन में देश के विभिन्न संस्थानों से पधारे 16 वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में भागीदारी की। प्रशिक्षण में प्रोफेसर डा. एस.सी. बिशप, रोसलिन संस्थान, ईडनबर्ग विश्वविद्यालय ने प्रशिक्षक के रूप में व्याख्यान दिया इसके अतिरिक्त डा. के. थंगराज सी.सी.एम.बी. हैदराबाद, डा. टी. महापात्रा, आई.ए. आर आई, नई दिल्ली एवं डा. पी.सी. रथ, जे.एन.यू., नई दिल्ली द्वारा भी व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। प्रशिक्षण का मुख्य आकर्षण आनुवंशिकी पशु रोग रोधकता रहा, जिनमें प्रशिक्षणार्थियों को पोषक प्रतिरोधकता, लघु रोमान्थी पशुओं के अन्त परजीवी के सम्बन्ध में गुण संकेतकों की पहचान,



क्रोमोजोमल मैपिंग, क्यू.टी.आर.एल. स्थिति का आंकलन, जीन परीक्षण तथा पी.सी.आर. द्वारा आदि पर प्रशिक्षण दिया गया।

अद्भुत: बरबरी बकरी द्वारा 5 बच्चों का जन्म

संस्थान द्वारा प्रचालित 'प्रौद्योगिकी स्थानांतरण परियोजना' के अन्तर्गत संस्थान वैज्ञानिकों द्वारा जनित तकनीकियों के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरण परिणाम अब आने लगे हैं। दिनांक 25 अक्टूबर 2011 को मखदूम ग्राम में श्रीमती उर्मिला देवी की एक बरबरी बकरी ने पांच (2 नर एवं 3 मादा) मेमनों को जन्म दिया। सभी मेमनों का जन्म भार 1.5 कि.ग्रा. के औसत का रहा। मेमनों की प्रति ब्यात संख्या में वृद्धि संस्थान से उत्पन्न उन्नयित बकरों से गर्भाधान से संभव हुआ। ज्ञात हो कि चयन प्रक्रिया द्वारा उन्नत बकरों को पैदा करना संस्थान की नस्ल सुधार परियोजना का एक सतत प्रयास है इन उन्नत बकरों को संवर्धित गुण के साथ किसानों में वितरित किया जाता है जिससे स्थानीय बकरियों की नस्ल में सुधार हो सके। गत वर्ष में संस्थान द्वारा 2000 से अधिक उन्नत बकरों का वितरण ग्रामीण क्षेत्रों में किया जा चुका है। जानकारी प्राप्त होने तक सभी मेमनों एवं मां बकरी स्वस्थ



पाये गये। संस्थान द्वारा श्रीमती उर्मिला देवी को बकरी पालन की समस्त तकनीकियों के साथ मेमनों के स्वास्थ्य एवं पोषण की सुविधा प्रदान की गई। ज्ञात हो कि श्रीमती उर्मिला देवी की इस बकरी ने गत वर्ष के 2 जनन काल में 8 मेमनों को जन्म दिया था और उन्हें वर्ष भर में बकरी पालन से रूपये 15000-18000 की वार्षिक आय होती है।

बकरियों में थनैला रोग व रोकथाम

इस रोग को स्तन शोथ भी कहते हैं। यह दुधारू बकरियों के थन (अयन) की एक छूत वाली/संसर्ग-जन्य बीमारी है जिससे दोनों थन प्रभावित हो सकते हैं। थनैला एक संक्रामक रोग है जो स्टेफाइलीकॉकस वंश के कुछ जीवाणुओं के कारण होता है। इस रोग में बकरियों के थनों पर सूजन आ जाती है जिसका उपचार तुरन्त आरम्भ करने से यह ठीक हो जाता है। इसमें रोग ग्रसित बकरियों मरती कम हैं परन्तु उनमें अयन सूखकर बेकार हो जाता है और दूध का उत्पादन काफी कम हो जाता है।

यह रोग ज्यादातर जीवाणुओं द्वारा फैलता है। बकरियों के गन्दे स्थान/जमीन पर बैठने से जीवाणु थन के रास्ते से प्रवेश करके शोथ उत्पन्न कर देते हैं। थनों में जीवाणु प्रवेश कर गुणात्मक वृद्धि करते हैं जिससे बकरी रोग ग्रस्त हो जाती है। इस रोग से प्रभावित बकरियों में अयन कड़े हो जाते हैं और इसमें सूजन आ जाती है दूध की मात्रा कम हो जाती है। कालान्तर में दूध के साथ मवाद व खून भी आ जाता है। दूध का रंग बदल जाता है तथा दूध शीघ्र ही फट जाता है रोग ग्रस्त बकरी की स्तन ग्रन्थि के छोटे-छोटे जखमों का स्थानीय इलाज तथा एन्टीबायोटिक द्वारा इलाज करने पर ग्रन्थि जखम खत्म हो जाते हैं। अतः इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में एन्टीबायोटिक से उपचार किया जा सकता है। जीवाणु नाशक



पेस्ट/मैस्टीलेप का प्रयोग सफाई करके थन के भीतर लगाने से लाभ मिलता है। बीमार बकरियों का दूध अवश्य निकालना चाहिये तथा इसे प्रयोग में भी नहीं लाना चाहिये। बाड़ों की उत्तम सफाई रखना इस रोग से बचाव का प्रमुख सूत्र है। थन के जखम या सूजन का तत्काल उपचार करना चाहिये तथा दूध निकालने से पहले थन/अयन को पोटाश/सेवलान के घोल से अच्छी तरह धोना चाहिये। मैमीडियम नामक दवा की 50 ग्राम मात्रा गुड़/शीरे में मिलाकर, चार खुराक बनाकर प्रतिदिन एक खुराक देने से इस रोग में काफी सुधार देखा गया है।

— डा. हरिऔध तिवारी

उत्कृष्ट संस्थान पुरस्कार

निर्धनतम भारतीय ग्रामीण वर्ग को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने हेतु उत्कृष्ट कार्य करने के लिए केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा 'सरदार पटेल उत्कृष्ट परिषद संस्थान' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संस्थान निदेशक डा. देवेन्द्र स्वरूप ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के स्थापना दिवस सम्मेलन में कृषि मंत्री भारत सरकार माननीय श्री शरद पवार जी से यह पुरस्कार प्राप्त किया।



बकरी पनीर/चीज

बकरी पालकों को बकरी उत्पाद से उचित आमद हो इसके लिए जरूरी है कि दूध एवं मांस से कुछ गुण संवर्धित उप उत्पाद तैयार किये जायें। ऐसे ही उप उत्पादों में बकरी चीज (पनीर) एक है। पश्चिमी देशों में बकरी दूध से तैयार पनीर व्यापक रूप से पसंद किया जाता है। वर्तमान में भारत में भी अब सुस्वादित एवं मधुर सुगन्ध वाला बकरी पनीर काफी अधिक पसन्द किया जाता है। यह अपेक्षाकृत रूप से गाय पनीर से अधिक स्वास्थ्य प्रदायक है। बकरी पनीर में गाय पनीर की अपेक्षा कुल वसा एवं ऊर्जा कैलोरी कम होने के कारण इसकी लोकप्रियता अधिक है। गाय पनीर में 30 ग्राम में जहाँ 10 ग्राम वसा एवं 100 कैलोरी ऊर्जा होती है। वहीं बकरी के पनीर में वसा की मात्रा 6 ग्राम एवं ऊर्जा कुल 80 कैलोरी प्रति 30 ग्राम पायी जाती है। यही कारण है कि कमर साइज को कम करने के इच्छुक लोग बकरी पनीर को पसंद करते हैं। बकरी पनीर को अधिक पसन्दीदा होने का दूसरा यह भी कारण है कि यह अपेक्षाकृत रूप से अधिक पचनशील है। जनसंख्या के काफी बड़े हिस्से में लेक्टोज के लिए सहनशीलता न होने की वजह से लोगों में दूध या दूध से बने उत्पाद का पाचन भली-भांति न होने की शिकायत मिलती है। ऐसे लोगों को भी बकरी दूध से प्राप्त पनीर का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। यद्यपि दोनों ही प्रकार के पनीर में लेक्टोज की मात्रा समान है तथापि बकरी वसा के ग्लोब्यूलस, आकार में छोटे होने के कारण, इसे अपेक्षाकृत रूप से बेहतर पचनशील बना देते हैं। बकरी पनीर कैल्सियम का भी एक



अच्छा स्रोत है। बकरी पनीर में कैल्सियम की मात्रा लगभग 40 (सोफ्ट चीज) से 240 मि.ली. ग्राम (हार्ड चीज) प्रति 30 ग्राम तक पायी जाती है जो गाय पनीर की मात्रा (200 मि.ली. ग्राम, हार्ड चीज) से अधिक है। कम ऊर्जा कैलोरी एवं अधिक कैल्सियम का पाया जाना इसे एक अच्छा खाद्य विकल्प बनाता है। सुस्वादित होने के कारण बकरी चीज (पनीर) को अनेक तरह से खाया जा सकता है। हरी सब्जियों के साथ या ब्रेड पर मक्खन की जगह लगा कर इसका उपयोग भली भांति किया जा सकता है। सलाद या पीजा के साथ भी इसका उपयोग रूचिकर है। आलू के साथ मिलाकर पकोड़ों के रूप में या अन्य स्वादिष्ट व्यंजन के रूप में इसका प्रयोग आसानी से किया जा सकता है। ऐसा कर आप अपने लिए उत्तम स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के साथ-साथ निर्धन बकरी पालकों की आय को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

संकलन - दिनेश कुमार शर्मा

बकरियों में टीकाकरण, कृमिनाशन एवं डिपिंग

क्र. कार्य-विवरण	खुराक व देने की विधि	सुरक्षा अवधि	वैक्सीन की उपलब्धता/उत्पादनकर्ता/विशेष विवरण
1. टीकाकरण अ. पी.पी.आर. (बकरी प्लेग)	<ul style="list-style-type: none"> 1 मि.ली. त्वचा के नीचे सुई द्वारा 	तीन वर्ष	1. इण्डियन इम्यूनोलोजिकल्स लि. रक्षापुरम पो.-गाचीबाऊली, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) 2. इन्टरवेट (इण्डिया) प्रा. लि., स्काई लार्क, लीला टाकीज के निकट, लखनऊ (उ.प्र.) 3. भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, (उ.प्र.) 4. पशु चिकित्सा दवायें व टीके बेचने वाली थोक दुकानें
ब. ऐंट्रोडोक्सीमिया (ई.टी.)	<ul style="list-style-type: none"> 2 मि.ली. त्वचा के नीचे सुई द्वारा प्रथम खुराक के 14-21 दिन बाद बूस्टर डोज 2 मि.ली. त्वचा के नीचे 	एक वर्ष	1. इण्डियन इम्यूनोलोजिकल्स लि. रक्षापुरम पो.-गाचीबाऊली, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) 2. इन्टरवेट (इण्डिया) प्रा. लि., स्काई लार्क, लीला टाकीज के निकट, लखनऊ (उ.प्र.) 3. भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, (उ.प्र.) 4. पशु चिकित्सा दवायें व टीके बेचने वाली थोक दुकानें 5. समस्त प्रदेशों के पशु पालन विभाग
स. बायोवैक (एफ.एम. डी.+एच.एस.) खुरपका-मुंहपका एवं घुरका/ गलाघोंटू के लिए	<ul style="list-style-type: none"> 1 मि.ली. मांस में (सुई द्वारा गहराई में लगाएं) 	एक वर्ष	1. इण्डियन इम्यूनोलोजिकल्स लि., रक्षापुरम, पो.-गाचीबाऊली, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) 2. राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, (एन.डी.डी.बी.), कमल टाकीज के निकट, सफदरजंग, नई दिल्ली 3. पशु चिकित्सा दवायें व टीके बेचने वाली थोक दुकानें
2. कृमिनाशन (पेट के कीड़े)	<ul style="list-style-type: none"> मानसून (वर्षा ऋतु) प्रारम्भ होने पर (जून-जुलाई) मानसून (वर्षा ऋतु) समाप्त होने पर (अक्टूबर) 	वर्ष में दो बार प्रथम खुराक द्वितीय खुराक	बाजार में उपलब्ध कृमिनाशकों पशु चिकित्सक के निर्देशानुसार पिलाएँ।
3. डिपिंग या सर्वांग स्नान (बाह्य परजीवियों जैसे- जुओं, किलनी, माइट इत्यादि को मारने हेतु दवा के पानी में पशु को नहलाना)	<ul style="list-style-type: none"> माह जुलाई माह अक्टूबर या नवम्बर 	प्रथम बार द्वितीय बार	साइपर मेथ्रिन या डेल्टामेथ्रिन के 0.1 से 0.4 प्रतिशत के घोल से पशु को नहलायें। सावधानियां:- 1. नहलाने से पूर्व पानी जरूर पिलाएँ। 2. सभी पशुओं को नहलाने से पूर्व टेस्ट डिपिंग अवश्य करें।

प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

- डा. आर.एस. पबैय्या, प्रधान वैज्ञानिक, पशु स्वास्थ्य विभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली में मालीक्यूलर टेकनिक्स एन डाइग्नोसटिक्स 'दूधारू पशुओं, फार्म एनिमल्स एवं मुर्गीयों की बीमारियों के निदान एवं रोकथाम' में परमाणु तकनीकों पर आयोजित एक प्रशिक्षण में सहभागिता की गयी।
- डा. आर.एस. पबैय्या, प्रधान वैज्ञानिक एवं डा. प्रभात त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में दिनांक 21-26 नवम्बर, 2011 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण "रिसर्चर ट्रेनिंग-VI-एस.ए.एस." का प्रयोग करते हुये पशु डाटा का विश्लेषण पर, एन.ए.आई.पी. परियोजना के अन्तर्गत सहभागिता की गयी।
- डा. मंजूनाथ रेड्डी, वैज्ञानिक एवं डा. एन. शिवशरण अप्पा, वैज्ञानिक पशु स्वास्थ्य विभाग द्वारा 15-28 नवम्बर, 2011 तक केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान में आयोजित 'जेनेटिक डाईसोक्टिंग ऑफ कम्प्लेक्स ट्रेड एनालिस विद स्पेशल रिफरेंस टू जेनेटिक रजिस्ट्रेशन इन जी.आई.एन. इन गोटस' में सहभागिता की गयी।
- डा. एन. रामाचन्द्रन, वैज्ञानिक द्वारा केन्द्रीय भेंड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर में दिनांक 14-27 नवम्बर, 2011 के दौरान आयोजित 'कार्बन सिक्वेस्ट्रेशन/कार्बन ट्रेडिंग/क्लाइमेट चेंज' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागिता की।
- डा. सोविक पाल, वैज्ञानिक द्वारा पशु चिकित्सा महाविद्यालय के.वी.ए.एफ.एस.यू., हैब्ल, बंगलौर में दिनांक 21 नवम्बर, 2011 से 11 दिसम्बर, 2011 तक एडवांस इन वेटेनरी एन्टामौलोजी एण्ड इकेरोलोजी पर आयोजित प्रशिक्षण में सहभागिता की गयी।
- श्री सतीश चन्द्रा, तकनीकी अधिकारी ने भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में दिनांक 2-3 नवम्बर, 2011 तक आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम 'इन्स्टालेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम एण्ड लान्व वर्कशाप फार कनसोरसिया बेस्ड रिसर्च प्रोजेक्ट' 'स्ट्रेनथिनिंग स्टेटिकल कम्प्यूटिंग फार एन.ए. आर.आर.एस.' में सहभागिता की।
- डा. एस.डी. खर्चे, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान में दिनांक 03-23 फरवरी, 2012 की अवधि के दौरान आयोजित 'एम्ब्रियोनिक एण्ड स्पर्मेटोगोनियल स्टेमसेल बायलोजी' पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण में सहभागिता की।
- डा. आर. प्रियदर्शनी, वैज्ञानिक द्वारा एन.ए.आई.पी. बंगलौर में दिनांक नवम्बर, 22 से 12 दिसम्बर, 2011 तक आयोजित विंटर स्कूल में 'फंक्सनल जिनोमिक एप्रोचेज फार इनहान्सिंग फरटीलिटी इन लाइवस्टॉक' प्रशिक्षण में सहभागिता की।
- आई.एस.एस.जी.पी.यू., अविकानगर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला में डा. सतेन्द्र कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, डा. अनिल कुमार गोयल, प्रधान वैज्ञानिक, डा. विवेक गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. रामबाबू शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डा. टी.के. दत्ता, प्रधान वैज्ञानिक एवं डा. हरिऔध तिवारी, वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी संस्थान निदेशक डा. देवेन्द्र स्वरूप जयपुर में आयोजित दिनांक 7 से 9 दिसम्बर 2011 तक कार्यशाला में सहभागिता की।
- इण्डियन सोसाइटी ऑफ वेटेनरी मेडिसिन द्वारा आइजोल में दिनांक 02-05 फरवरी, 2012 आयोजित कार्यशाला में संस्थान निदेशक डा. देवेन्द्र स्वरूप, डा. अशोक कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, डा. पी.के. राउत, प्रधान वैज्ञानिक, डा. विवेक गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक व डा. हरिऔध तिवारी, वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा सहभागिता की।
- इण्डियन एसोसिएशन फार एडवांसमेन्ट आफ वेटेनरी पैरासाइटलोजी (आई.ए.ए.वी.पी.) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में दिनांक 15-17, मार्च, 2012 तक डा. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक, डा. सौविक पाल, वैज्ञानिक, डा. विनय चतुर्वेदी, पशु चिकित्सा अधिकारी ने सहभागिता की।

राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित त्रैमासिक बैठक

राजभाषा अधिनियम के अन्तर्गत संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन क्रमशः दिनांक 08 सितम्बर, 2011, दिनांक 14 दिसम्बर, 2011 एवं दिनांक 27 मार्च, 2012 को संस्थान निदेशक एवं अध्यक्ष संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में किया गया। इन बैठकों में संस्थान के समस्त विभागाध्यक्ष, अनुभाग प्रभारी व संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने सहभागिता की। बैठकों के दौरान संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु किये गये कार्य कलापों पर गहन विचार-विमर्श किया गया तथा संस्थान निदेशक द्वारा समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को संस्थान के 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने हेतु निर्देशित किया गया। प्रशासनिक अधिकारी व प्रशासन के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रत्येक दशा में धारा 3(3) का अनुपालन करने के लिए निर्देश जारी किए गये। इसी दौरान राजभाषा अनुभाग को समस्त कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता व रुचि जागृत करने के उद्देश्य से हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिये कर्मचारियों को नियमानुसार नगद पुरस्कार शुरू करने हेतु निर्देश जारी किया गया।



हिन्दी कार्यशाला

1 सितम्बर, 2011 से 31 मार्च, 2012 तक आयोजित त्रैमासिक हिन्दी कार्यशालाएँ

- दिनांक 27.09.2011 को द्वितीय त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों ने सहभागिता निभाई। डा. शीलेन्द्र वशिष्ठ, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा), पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा द्वारा 'प्रशासनिक शब्दावली एवं अनुवाद' पर एक व्याख्यान दिया गया।
- दिनांक 28 दिसम्बर, 2011 को तृतीय त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों के अतिरिक्त हाईस्कूल उत्तीर्ण कुशल सहा. कर्मचारियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला में डा. चन्द्र कान्त त्रिपाठी, रजिस्ट्रार, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने से सम्बन्धित अपने विचार व्यक्त किये।
- दिनांक 29 मार्च, 2012 को चतुर्थ त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों के अतिरिक्त हाईस्कूल उत्तीर्ण कुशल सहा. कर्मचारियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला में डा. देवेन्द्र शुक्ला, प्राध्यापक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को लागू कर अधिकाधिक हिन्दी का कार्यालयीन कार्यों में प्रयोग पर व्याख्यान दिया।

जीवाणुभोजी विषाणु : प्रतिजैविक का एक विकल्प

जीवाणुभोजी वो विषाणु हैं जो जीवाणुओं को संक्रमित करते हैं। जीवाणुभोजी पृथ्वी पर सबसे ज्यादा पाये जाने वाले व सबसे विविध जीव होते हैं। प्रारूपिक तौर पर, जीवाणुभोजी एक बाह्य प्रोटीन आवरण एवं जननद्रव्य से बना होता है। जीवाणुभोजी का संजीन डी.एन.ए. अथवा आर.एन.ए. से निर्मित होता है। जीवाणुभोजी उन सभी जगहों पर पाए जाते हैं जहाँ पर जीवाणु पाये जाते हैं। उदाहरण के तौर पर मिट्टी, जल, आंत्र, सीवेज इत्यादि। जीवाणुभोजी, जन्तु व पादप विषाणुओं से काफी अलग होते हैं।

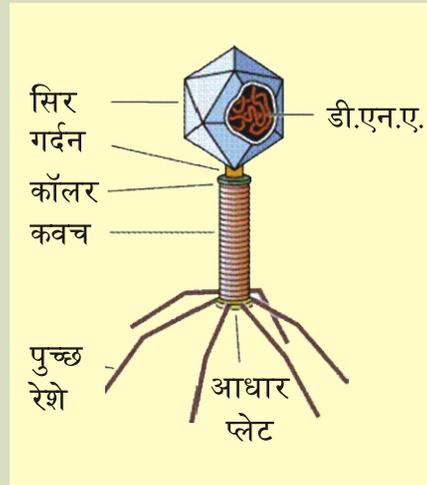
विभाजन चक्र के आधार पर जीवाणु-भोजी दो प्रकार के होते हैं। (1) लयनकारी (घातक) व (2) अलयनकारी। लयनकारी जीवाणुभोजी जीवाणु को संक्रमित कर उसका लयन कर देता है जबकि दूसरे प्रकार का जीवाणुभोजी जीवाणु का लयन नहीं करता है।

जीवाणुभोजी-चिकित्सा (जीवाणु-भोजियों द्वारा की जाने वाली चिकित्सा) में लयनकारी जीवाणुभोजियों का प्रयोग किया जाता है। प्रायः जीवाणुभोजी क्रियाशीलता में अति विशिष्ट व संकीर्ण लयनकारी परास वाले होते हैं। इस तरह

के जीवाणुभोजी चिकित्सीय प्रयोग के लिए सही नहीं होते हैं। चिकित्सीय उपयोग के लिए बृहत लयनकारी परास वाले जीवाणुभोजी उपयुक्त माने जाते हैं।

आजकल मानव व पशुचिकित्सा में प्रतिजैविकों का अहम स्थान है। इनका प्रयोग दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। इनके अत्यधिक प्रयोग से जीवाणुओं में इनके खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता विकसित होने लगी है। यह प्रतिरोधकता भी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। वास्तव में हम सब लोग प्रतिजैविक-प्रतिरोधकता का समस्या से जूझ रहे हैं।

औषधि प्रतिरोधक जीवाणुओं के विरुद्ध



जीवाणुभोजी-चिकित्सा प्रतिजैविक-चिकित्सा से कई मामलों में अच्छी है जैसे कि (1) इसमें प्रतिरोधकता की समस्या नहीं पायी जाती, (2) यह विषाक्त प्रभावों से मुक्त है, (3) इसमें शरीर के लाभदायक जीवाणुओं की क्षति नहीं होती है। जीवाणुभोजी - चिकित्सा विभिन्न प्रकार के जीवाणु संक्रमण के विरुद्ध सफल पायी गई है जैसे कि वैकोमाइसिन-रोधी इन्टीरोकोकाई, मेथिसिलिन-रोधी स्टैफाइलोकोकोस ऑरिस, ई.कोलाई., स्यूडोमोनास एरिजिनोसा, श्वसन / जनन / मूत्र / तन्त्रिका / आहार तंत्र से संबंधित रोग जनक जीवाणु। इस प्रकार भविष्य में जीवाणुभोजी-चिकित्सा प्रतिजैविक-चिकित्सा का एक अति उपयुक्त विकल्प साबित होगा।

केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत

दूरभाष न.: 0565-2763380,

फैक्स न.: 0565-2763246

ई-मेल: director@cirg.res.in

वेबसाइट: <http://cirg.res.in>

हेल्पलाइन न.: 0565-2763320

निदेशक, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित एवं विजय प्रिंटिंग प्रेस, मथुरा, दूरभाष : 0565-2460354, 09412279156 द्वारा मुद्रित

